''नारायण से ब्रह्मा की उत्पत्ति होती है, नारायण से प्रजापति उत्पन्न होते हैं, नारायण से ही इन्द्र और आठ वसु होते हैं और नारायण से ही ग्यारह रुद्रों और बारह आदित्यों का जन्म होता है।''

अर्थववेद में ही आगे कथन है: **ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रः**—'देवकीनन्दन श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम परब्रह्म हैं।' पुनः कहा गया है: **एको वै नारायण आसीन्न ब्रह्मा न ईशानो नापो नाग्नि समौ नेमे द्यावापृथिवी न नक्षत्राणि न सूर्यः। स एकाकी न रमते तस्य ध्यानान्तःस्थस्य यत्र छान्दोगैः क्रियमाणाष्टकादिसंज्ञका स्तुतिस्तोमः स्तोममुच्यते।**

''सृष्टि के आदिकाल में एकमात्र भगवान् नारायण थे। उस समय न ब्रह्मा था, न शिव, न अग्नि, न चन्द्रमा, न नक्षत्र, न आकाश और न सूर्य ही था। उस काल में केवल श्रीकृष्ण थे, जो जीवमात्र को रच कर उसमें रमण करते हैं।''

पुराणों में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है कि शिव का जन्म परमेश्वर श्रीकृष्ण से हुआ और वेद भी कहते हैं कि ब्रह्मा, शिव, आदि के स्रष्टा परमेश्वर श्रीकृष्ण ही उपास्य हैं। 'मोक्षधर्म' में श्रीकृष्ण का वचन है **प्रजापतिं च रुद्रं चाप्यहमेव सृजामि वै तौ हि मां न विजानीतो मम माया विमोहितौ।** ''प्रजापति, शिव, आदि का सृजन मैं ही करता हूँ, यद्यपि मेरी माया से मोहित होने के कारण वे यह नहीं जानते।'' 'वराह पुराण' में कहा है—**नारायणः परो देवस्तस्माज्जातश्चतुर्मुखः तस्माद्रुद्रोऽभवद्देवः स च सर्वज्ञतां गतः।** ''नारायण परम पुरुष हैं। उनसे ब्रह्मा का जन्म हुआ और उससे रुद्र का।''

इस प्रकार सिद्ध हो जाता है कि भगवान् श्रीकृष्ण सम्पूर्ण प्रजा के जनक हैं। इसी से उन्हें सब प्राणी-पदार्थों का परम निमित्त कारण कहा जाता है। स्वयं उनका कथन है, ''मैं सम्पूर्ण लोकों का आदिकारण हूँ, सब कुछ मुझ से ही उत्पन्न होता है। इसलिए सब तत्त्व मेरे आधीन हैं, मुझ से स्वतन्त्र कुछ भी नहीं है।'' एकमात्र श्रीकृष्ण परमेश्वर हैं, दूसरा कोई नहीं। इस प्रकार प्रामाणिक सद्गुरु अथवा वैदिक शास्त्रों से श्रीकृष्ण के तत्त्व को जानकर जो मनुष्य अपनी सारी शक्ति को कृष्णभावना में लगा देता है, वही सच्ची विद्वत्ता को प्राप्त होता है। उसकी तुलना में अन्य सभी, जो श्रीकृष्ण को तत्त्व से नहीं जानते, मूर्ख हैं। एक मूर्ख ही श्रीकृष्ण को साधारण मनुष्य समझने की धृष्टता करेगा। कृष्णभावनाभावित भक्त ऐसे मूर्खों की विचारधारा से भ्रमित न हो। गीता की सारी अप्रामाणिक टीकाओं और मीमांसाओं से बचकर उसे पूर्ण दृढ़ता और निश्चयसहित कृष्णभावना के पथ पर अग्रसर होना चाहिये।

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च।।९।।

मच्चित्ताः=मन से निरन्तर मेरे अनन्य चिन्तन में संलग्न; **मद्गतप्राणाः**=मेरी सेवा में प्राणों को अर्पण करने वाले; **बोधयन्तः**=प्रसार करते हैं; **परस्परम्**=आपस में; **कथयन्तः च**=वार्ता करते हुये भी; **माम्**=मेरी; **नित्यम्**=सदा; **तुष्यन्ति च**=सन्तुष्ट होते